युवा प्रभाग-दिव्य दर्पण ग्रुप
दिसम्बर, 08 मास के पुरुषार्थ की प्वाइंटस

<u>दिसम्बर मास का चार्ट</u>: इस मास में भी हम विशेष मन्सा श्रेष्ठ स्थिति के द्वारा विश्व कल्याण की सेवा (योग के प्रयोग),और सम्पूर्ण निर्विकारी बनने का लक्ष्य रखेंगे।

बापदादा के महावाक्य है (20/10/08): "आप सबको सकाश देनी पड़ेगी और सकाश देने में ही आपका अपना तीव्र पुरुषार्थ हो जायेगा। थोड़े समय में सकाश द्वारा सर्व शक्तियां देनी पड़ेंगी और जो ऐसे नाजुक समय में सकाश देंगे, जितनों को देंगे, चाहे बहुतों को, चाहे थोड़ों को उतने ही द्वापर और कलियुग के भक्त उनके बनेंगे। तो संगम पर हर एक भक्त भी बना रहे हैं क्योंकि दिया हुआ सुख और शान्ति उनके दिल में समा जायेगा और भक्ति के रूप में आपको रिटर्न करेंगे।"

<u>विधि</u> :

इस मास में चार सप्ताह के लिए चार प्रकार की विश्व कल्याण की सेवा मन्सा श्रेष्ठ स्थिति द्वारा करेंगे और निम्नलिखित चार बातों में सम्पूर्ण निर्विकारी बनेंगे :

सप्ताह	विश्व कल्याण की सेवा	गुण	शक्ति	दिव्य दर्पण की मन्सा श्रेष्ठ स्थिति के प्रयोग	सम्पूर्ण निर्विकारी
प्रथम	ब्राह्मण आत्माओं की सेवा	क्षमा	स्नेह	ब्राह्मण आत्माएं परमात्मा की पसन्द की हुई है,उन सर्व आत्माओं का विघ्न टल जाये	सम्बन्ध की पवित्रता
दूसरा	चिन्ताग्रस्त आत्माओं की सेवा	सहयोग	शान्ति	स्वयं बेफिक्र बादशाह की स्थिति में स्थित होकर सर्व आत्माओं को चिन्ताओं से मुक्त करें	धन की पवित्रता
तीसरा	निर्बल और असन्तुष्ट आत्माओं की सेवा	सन्तुष्टता	शक्ति	स्वयं की सन्तुष्टता की शक्ति के आधार पर उन आत्माओं को तृप्त करना	वृत्ति की पवित्रता
चौथा	निराश और हताश आत्माओं की सेवा	खुशी	ज्ञान	ड्रामा में सर्व श्रेष्ठ पार्टधारी बनकर उमंग-उत्साह से भरपूर होकर खुशी के वायब्रेशन भेजने हैं	स्वप्न की पवित्रता

❖ फ्रेमबुक में ऊपर चार पंक्तियों में निम्नलिखित बिन्दु लिखकर उसका परिणाम प्रतिदिन रात को सोने से पहले लिखें:

1.गुड मोर्निंग - 3.30
2.अमृतवेला - 3.30 से 4.45, बाबा के कमरे में
3.व्यायाम/पैदल - हाँ जी
4.ट्रैफिक कन्ट्रोल- 5
5.मुरली क्लास - क्लास में सुनी
6.अव्यक्त मुरली पढ़ी? - हाँ जी
7.स्वमान की स्मृति -बहुत अच्छी
8.ब्राह्मण आत्माओं की सेवा - 80%
9.सम्बन्ध में पवित्रता - 75%
10. नुमा शाम का योग- हाँ जी
11.गुड नाइट- 10.30

- **विश्व कल्याण की सेवा** – सारा विश्व हमारा परिवार है और हम इस परिवार की पूर्वज आत्माएं है। इन सबका कल्याण हम नहीं करेंगे तो और कौन करेगा? विश्व कल्याणकारी बाबा ने हम आत्माओं को इस कार्य के लिए निमित्त बनाया है तो सारे दिन में चेक करना है कि कोई भी कार्य करते हमारी मन्सा द्वारा हमने विश्व सेवा का कार्य किया? उसके लिए विशेष अमृतवेले हम अभ्यास करेंगे उस शक्ति को बाबा से प्राप्त कर विश्व कल्याण की सेवा में लगायेंगे ।

  <u>दिनभर में ड्रिल का अभ्यास</u> : अमृतवेले से लेकर रात तक बीच-बीच में एक सेकण्ड में आत्म-अभिमानी, अपने शरीर को भी देखते हुए अशरीर स्थिति में न्यारा और बाप का प्यारा अनुभव कर उस शक्ति का अनुभव करें जो दी गई है। उस शक्ति से भरपूर होकर फिर शक्ति को समस्त संसार में फैलायें।

- **सम्पूर्ण निर्विकारी:-**

पवित्रता संगमयुग का वर्सा और वरदान है, जन्म-सिद्ध अधिकार है, निज़ी संस्कार और आत्मा का मूल धर्म है। पवित्रता की धारणा से मन में सच्चाई, बुद्धि की सफाई और कर्मो में ईमानदारी का वास होता है।

1. सम्बन्ध की पवित्रता : आत्मा के नाते सभी से हमारा सम्बन्ध भाई-भाई का है और साकारी शरीर के नाते भाई-बहन का सम्बन्ध है। सम्बन्ध बन्धन न बनकर पुरूषार्थ के लिए श्रेष्ठ संग बन जाये। तो चेक करे हमारे सम्बन्ध कितने % पवित्र हुए।
2. धन की पवित्रता : कर्म योगी स्थिति में स्थित होकर कमाया हुआ और ईश्वरीय नियमों का पालन कर धन खर्च वा कमाया हुआ पवित्र धन कहा जाता है - जैसे कि रिश्वत देना या लेना वा जिसके प्रयोग से मन में विकारों की उत्पत्ति हो। तो चेक करें कि कितने % हमारा धन पवित्र रहा।
3. वृत्ति की पवित्रता : कैसा भी वायुमण्डल हो लेकिन स्वयं की शक्तिशाली वृत्ति वायुमण्डल को परिवर्तन में ला सकती है। मुझे स्वयं अपनी पावरफुल वृत्ति से जो भी अपवित्र वा कमज़ोरी का वायुमण्डल है उसको मिटाना है। तो चेक करना है कि कितने % हमारी वृत्ति पवित्र रही।
4. स्वप्न की पवित्रता : ज्ञानी बनने के बाद कोई भी कर्म हमारा विकर्म न बनें इस पर तो हमारा लक्ष्य होता है परन्तु जो बातें कर्म में नहीं आती लेकिन अनेक जन्मों के संस्कार होने के कारण वे स्वप्न के रूप में आती है। कभी कभी ईश्वरीय मर्यादा एवं नियमों का उल्लंघन करने पर अपवित्र स्वप्न सजाओं के रूप में भी आते है। तो चेक करें कि हमारे स्वप्न कितने % पवित्र रहे।

❖ दिव्य दर्पण की मन्सा श्रेष्ठ स्थिति के प्रयोग के जो प्वाइन्टस लिखी हैं उसके अभ्यास के साथ-साथ फ्रेम बुक में आज की मुरली के पश्चात् कम से कम 21 बार आज का स्वमान लिखना है:

स्वमान:

स्नेह:	16. मैं आत्मा सर्वशक्तियों से सम्पन्न हूं।
1. मैं आत्मा स्नेह का फरिश्ता हूं।	17. मैं सर्व शक्तिवान परमात्मा की छत्रछाया में हूं।
2. मैं आत्मा स्नेह की मूर्ति हूं।	18. मुझ आत्मा का साथी सर्वशक्तिवान है।
3. मैं आत्मा आधारमूर्त और उद्धारमूर्त हूं।	19. मैं आत्मा सन्तुष्ट मणि हूं।
4. मैं आत्मा सर्वश्रेष्ठ ब्राह्मण हूं।	20. मैं आत्मा विघ्न विनाशक हूं।
5 मैं आत्मा सच्चे प्यार की मूरत हूं।	21. मैं आत्मा निर्विघ्न हूं।
6. मैं आत्मा मास्टर क्षमा का सागर हूं।	ज्ञान:
7 मैं आत्मा मास्टर प्यार का सागर हूं।	22. मैं आत्मा ज्ञान सागर की सन्तान हूं।
शान्ति:	23. मैं आत्मा आनन्द का सागर हूं।
8. मैं आत्मा शान्ति प्रिय हूं।	24. मैं ज्ञानी तू आत्मा हूं।
9. मैं आत्मा शान्तचित्त हूं।	25. मैं आत्मा खुशनसीब हूं।
10.मैं आत्मा शान्ति का अवतार हूं।	26. मैं आत्मा खुशी की खुराक से तन्दुरस्त हूं।
11.मैं आत्मा शान्ति का सितारा हूं।	27. मैं आत्मा खुशी के खज़ाने से सम्पन्न हूं।
12. मुझ आत्मा का स्वधर्म शान्ति है।	28. मैं आत्मा ज्ञानामृत का पान करता हूं।
13. मैं आत्मा शान्तिधाम की निवासी हूं।	29 मैं आत्मा ज्ञान नदी हूं।
14. मैं आत्मा शान्तिदूत हूं।	30. मैं आत्मा ज्ञानस्वरूप हूं।
शक्ति :	31. मैं आत्मा सम्पूर्ण निर्विकारी हूं।
15. मैं आत्मा मास्टर सर्व शक्तिवान हूं।	

To Get sms Daily for Swaman Please type “JOIN Divyadarpan” and sms to 567678.